भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या : 2978
बुधवार, 20 दिसंबर, 2023 को उत्तर देने के लिए

अंतरिक्ष में निजी कंपनियां

2978. श्रीमती केशरी देवी पटेल :
श्री सत्यदेव पचौरी :
श्री दुष्यंत सिंह :
श्रीमती रंजनबेन भट्ट :
डॉ. अरविन्द कुमार शर्मा :

क्या **प्रधानमंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या निजी कंपनियों के लिए अंतरिक्ष को खोलने से भारतीय अंतरिक्ष क्षेत्र में एक नए युग की शुरूआत हुई है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या सरकार ने अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी उद्योगों की और अधिक भागीदारी के लिए कोई पहल की है;

(ग) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इस क्षेत्र में पंजीकृत स्टार्ट-अप की संख्या कितनी है;

(घ) सरकार द्वारा देश के पिछड़े क्षेत्रों में हैंड-होल्डिंग, पारितंत्र सहायता और वित्तपोषण के माध्यम से शैक्षिक समुदाय के साथ-साथ युवा स्टार्टअप्स तक पहुंचने के लिए क्या प्रयास किए जा रहे हैं; और

(ङ) विगत पांच वर्षों के दौरान अर्थव्यवस्था में अंतरिक्ष क्षेत्र के योगदान का ब्यौरा क्या है और आने वाले वर्षों में इसका कितना योगदान होने का अनुमान है?

उत्तर
कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय
तथा प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री
(डॉ. जितेन्द्र सिंह) :

(क), (ख) एवं (ग)

जी हां, सरकार ने भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023 की घोषणा की है, जो अंतरिक्ष गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में गैर सरकारी कंपनियों की आद्योपांत भागीदारी को सक्षम बनाती है।

...2/-

अंतरिक्ष क्षेत्र में दिए गए प्रोत्साहन एवं किए गए सुधार के कारण हुई प्रगति और प्रभाव निम्नलिखित हैं:

- डीपीआईआईटी स्टार्ट-अप इंडिया पोर्टल के अनुसार, अंतरिक्ष स्टार्ट-अप्स की संख्या वर्ष 2014 में केवल 1 से बढ़कर 2023 में 189 हो गई है।
- वर्ष 2023 में भारतीय अंतरिक्ष स्टार्ट-अप्स में निवेश बढ़कर 124.7 मिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया है।
- कुछ गैर सरकारी कंपनियों [एनजीई] ने स्वयं के उपग्रह प्रमोचित किए हैं। अनेक अन्य अंतरिक्ष उद्योग और स्टार्ट-अप्स भी स्वयं के उपग्रहों और उपग्रह-समूहों का निर्माण कर रहे हैं। ये उपग्रह कृषि, आपदा प्रबंधन, पर्यावरण निगरानी आदि के अनुप्रयोगों में योगदान देंगे।
- एक एनजीई ने अपना उप-कक्षीय प्रमोचन यान प्रक्षेपित किया।
- एक एनजीई द्वारा इसरो परिसर के भीतर पहली बार एक निजी प्रमोचन पैड और मिशन नियंत्रण केंद्र की स्थापना की गई। उस एनजीई द्वारा शीघ्र ही उप-कक्षीय प्रमोचन निर्धारित है।
- निजी कंपनियां उपग्रह आधारित संचार संबंधी समाधान खोज रही हैं। उपग्रह आधारित अनुप्रयोगों और सेवाओं में निजी कंपनियों की सहभागिता तेजी से बढ़ रही है।
- उपग्रह एकीकरण और परीक्षण सुविधाएं निजी क्षेत्र में उभरकर सामने आ रही हैं।
- निजी क्षेत्र द्वारा उपग्रह उप-प्रणालियों और भू-स्थित प्रणालियों का स्थानीय स्तर पर निर्माण किया जा रहा है।
- भारतीय निजी अंतरिक्ष कंपनियां तेजी से अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष संगठनों और कंपनियों के साथ सहयोग और साझेदारी में प्रवेश कर रही हैं।

(घ) देश के पिछड़े क्षेत्रों में हैंड-होल्डिंग, परितंत्र सहायता एवं वित्तपोषण के माध्यम से शैक्षिक समुदाय के साथ-साथ युवा स्टार्ट-अप्स तक पंहुचने के लिए किए जाने वाले प्रयास निम्नानुसार हैं:-

1. इन-स्पेस द्वारा भारत में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी शिक्षा को अपनाने के लिए एक राष्ट्रीय समिति का गठन किया गया है, जिसका उद्देश्य भारत के शैक्षिक संस्थानों में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी

शिक्षा के एकीकरण को सुगम बनाना एवं प्रोत्साहित करना, जागरूकता बढ़ाना, कौशल विकास एवं अनुसंधान करना है।

2. इन-स्पेस डिजिटल प्लेटफार्म (आईडीपी) पर सेवानिवृत इसरो के विषय विशेषज्ञों की सूची प्रकाशित की गई है। गैर सरकारी कंपनियां इन मेंटरों से विशेषज्ञ सलाह हेतु सीधे संपर्क कर सकती हैं।
3. मेंटर के रूप में अंतरिक्ष क्षेत्र में अनुभव रखने वाले तकनीकीविदों से आवधिक रूप से सहमति प्राप्त करना और गैर सरकारी कंपनियों से उन्हें जोड़ना।
4. अंतरिक्ष कार्यकलाप आयोजित करने के लिए छात्रों/ शिक्षा संस्थानों को प्रोत्साहित करने हेतु एक समिति का गठन किया गया है, जो उनके प्रस्ताव का मूल्यांकन करेगी और आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करेगी।
5. अंतरिक्ष के क्षेत्र में गुणवत्तायुक्त मानवबल विकसित करने के लिए इन-स्पेस बीज निधि योजना सहित इसरो के सहयोग से आवधिक रूप में कौशल विकास अल्पावधि पाठ्यक्रम आयोजित कर रहा है।

(ङ) भारतीय अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का वर्तमान आकार लगभग 8.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर (वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का लगभग 2-3%) होने का अनुमान लगाया गया है और आशा है कि रणनीति के क्रियान्वयन से वर्ष 2033 तक 44 बिलियन अमेरिकी डॉलर की भारतीय अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था हासिल की जा सकती है। अपेक्षित अर्थव्यवस्था संबंधी आंकड़े प्राप्त करने में निजी क्षेत्र की मुख्य भूमिका होगी। यह उम्मीद की जाती है कि निजी क्षेत्र उपग्रह निर्माण, प्रमोचक रॉकेट निर्माण, उपग्रह सेवाएं प्रदान करने और भूस्थित प्रणालियों के निर्माण में स्वतंत्र रूप से आद्योपांत समाधान प्रदान करेगा।

***